C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. **इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।**
2. **चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
3. **यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।**

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6) 8

जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम जीवन भी कहते है। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन भी कहा जाता है। यही दैवत्वपूर्ण जीवन है। इस जीवन का आधार यज्ञ होता है। शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है। यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति में बढ़ोत्तरी होती है। चारों वेदों में कहा गया है धरती का केंद्र या आधार यज्ञपूर्ण जीवन ही है, यानी सत्कर्मों पर ही यह धरती टिकी हुई है। इसलिए कहा गया है कि यदि पृथ्वी को बचाना है तो श्रेष्ठ कर्मों की तरफ़ समाज को लगातार प्रेरित करने के लिए कार्य करना चाहिए। सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती है। अपकारी यानि दूसरों को परेशान और दुख देने वाला जीवन ही राक्षसी

जीवन या शैतानी ज़िदगी कही जाती है। इस तरह के जीवन से ही समाज में सभी तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं। इस धरती को यदि समस्याओं और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा। सत्कर्म तभी किए जा सकते हैं, जब हम सोच-विचार कर कर्म करेंगे। विचार के साथ किया हुआ कर्म ही अपना हित तो करता है परिवार, समाज और दुनिया का भी इससे भला होता है। जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्भावना की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जाएगी। और ये सारे सद्‌गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए ज़रूरी माने गए हैं।

1. यज्ञीय जीवन किसे कहा गया है?
2. सामान्य जीवन क्या है?
3. धरती को सभी समस्याओं से मुक्त करने के लिए हमें क्या करना होगा?
4. जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए क्या ज़रूरी है?
5. शास्त्र में यज्ञ किसे कहा गया है?

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

सरसों, गेहूँ, और चने के
लगते कितने प्यारे खेत,
बिछी रेशमी चादरों से
रंग-बिरंगे न्यारे खेत।
संग हवा के झूला झूले

लहर-लहर लहराते खेत,
सजी धजी नर्तकियों से
कत्थक नृत्य दिखाते खेत।
ये है धरती का परिधान
ये हमारे लिए भगवान,
इनसे भरते सबके पेट
इनसे जीते पशु इन्सान।

1. कविता में किन-किन फसलों की बात है?
2. हवा चलने पर खेत कैसे लगते है?
3. खेतों को भगवान क्यों कहा गया है?

प्र .3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

आराधना

इन सबको किनारे रख दे।
द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?
अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन -सी पूजा में मग्न है?
आँखें खोलकर देख तो सही
तेरा देवता देवालय में नहीं है।
जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,
तेरा देवता वहीँ चला गया है।

क) कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में क्या कहते हैं?

ख) कवि के अनुसार देवता कहाँ चले गए हैं?

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

लिखवाई, शासकीय

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

उत्साह, भरसक

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1

पुरस्कार, बाकायदा

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

चलना, तोपची

ड़) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें : 3

1. लाभ और हानि
2. पाँच है आनन जिसके अर्थात् शिव
3. माल के लिए गाड़ी

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. बहुत से अफसर ईमानदार होते हैं।
2. आपकी यात्रा मंगलमय हो।
3. तुम उधर खड़े हो जाओ।
4. अहा! क्या मौसम है।

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. मंगन को देखि पट देत बार-बार है।
2. हनुमान की पूंछ में,लगन न पाई आग।
   लंका सगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।

3. सुरभित सुंदर सुखद सुमन तुम पर खिलते।
4. काली घटा का घमंड घटा,
   नभ मंडल तारक वृंद खिले।

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

सेनापति 'हे' मन से दुखी होकर वहाँ से चला गया। इसके बाद जनरल अउटरम ने नाना के महल को फिर घेर लिया। महल का फाटक तोडकर अँग्रेज सिपाही भीतर घुस गए, और मैना को खोजने लगे, किंतु आश्चर्य है, कि सारे महल का कोना-कोना खोज डाला; पर मैना का पता नहीं लगा।

क) सेनापति 'हे' क्यों चला गया?

ख) अउटरम ने महल को क्यों घेर लिया? तथा अँग्रेज सिपाही महल में क्यों घुस गए?

ग) महल के कोने-कोने में क्या खोजा जा रहा था और कौन नहीं खोज पाए?

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाईयों का सामना करा पड़ा?
2. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्याबरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?
3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए -
   'तुम परदे का महत्त्व नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं'
4. लेखिका महादेवी ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (1+2+2)

चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी
कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर-उधर रींवा के पेड़
काँटेटेदार कुरूप खड़े हैं।

1. अनगढ़ शब्द का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. दूर दिशाओं तक फैली हैं - का भाव क्या है?
3. पहाड़ियों के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2 x 4= 8

1. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?
2. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?
3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

भाव स्पष्ट कीजिए -

'और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।'

प्र. 9. लेखक के हिंदी लेखन में कदम रखने का क्रमानुसार वर्णन कीजिए। 4

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

1. 'आज-कल लोगों में त्योहारों के प्रति उत्साह एवं आस्था का अभाव का बढ़ना'
2. 'पुस्तक की आत्मकथा'

प्र. 11. आपके नाम से प्रेषित एक हजार रु. के मनीआर्डर की प्राप्ति न होने का शिकायती पत्र अधीक्षक, पोस्ट आफिस को लिखिए।

प्र. 12 ऑफिस में क्लर्क की नौकरी हेतु साक्षात्कार देने आए दो उम्मीदवारों के मध्य संवाद लिखें। 5

C.B.S.E

कक्षा : 9

हिंदी (अ)

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश :

1. **इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं - क, ख, ग, और घ।**
2. **चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
3. **यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।**

खंड - क

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×2=2) (2×3=6) 8

जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम जीवन भी कहते है। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन भी कहा जाता है। यही दैवत्वपूर्ण जीवन है। इस जीवन का आधार यज्ञ होता है। शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है। यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति में बढ़ोत्तरी होती है। चारों वेदों में कहा गया है धरती का केंद्र या आधार यज्ञपूर्ण जीवन ही है, यानी सत्कर्मों पर ही यह धरती टिकी हुई है। इसलिए कहा गया है कि यदि पृथ्वी को बचाना है तो श्रेष्ठ कर्मों की तरफ़ समाज को लगातार प्रेरित करने के लिए कार्य करना चाहिए। सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती

है। अपकारी यानि दूसरों को परेशान और दुख देने वाला जीवन ही राक्षसी जीवन या शैतानी ज़िदगी कही जाती है। इस तरह के जीवन से ही समाज में सभी तरह की समस्याएँ पैदा होती हैं। इस धरती को यदि समस्याओं और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा। सत्कर्म तभी किए जा सकते हैं, जब हम सोच-विचार कर कर्म करेंगे। विचार के साथ किया हुआ कर्म ही अपना हित तो करता है परिवार, समाज और दुनिया का भी इससे भला होता है। जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्भावना की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जाएगी। और ये सारे सद्‌गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए ज़रूरी माने गए हैं।

1. यज्ञीय जीवन किसे कहा गया है?

   उत्तर : जीवन तीन तरह का होता है। पहला परोपकारी जीवन, दूसरा सामान्य जीवन और तीसरा अपकारी जीवन। इसे उत्तम, मध्यम और अधम जीवन भी कहते है। उत्तम जीवन उनका होता है, जिन्हें दूसरों का उपकार करने में सुख का एहसास होता है, भले ही उन्हें कष्ट या नुकसान उठाना पड़े। इसे यज्ञीय जीवन कहा जाता है।

2. सामान्य जीवन क्या है?

   उत्तर : सामान्य जीवन वह होता है जो परंपरा के मुताबिक चलता है। यानी अपना और दूसरे का स्वार्थ सधता रहे। कोई बहुत ऊँची समाजोत्थान या परोपकार ही भावना नहीं होती है।

3. धरती को सभी समस्याओं से मुक्त करने के लिए हमें क्या करना होगा?

उत्तर : धरती को यदि समस्याओं और हिंसा से मुक्त करना है तो दैवत्वपूर्ण जीवन की तरफ विश्व और समाज को चलना पड़ेगा।

4. जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए क्या ज़रूरी है?

उत्तर : जितना हम प्राणीहित के लिए संकल्पित होंगे, उतना हमारा बौद्धिक और आत्मिक उत्थान होता जाएगा। हमारे अंदर मनुष्यता के भाव लगातार बढ़ते जाएँगे। प्रेम, दया करुणा, अहिंसा, सत्य और सद्भावना की प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जाएगी। और ये सारे सद्‌गुण ही जीवन यज्ञ को सफल बनाने के लिए ज़रूरी माने गए हैं।

5. शास्त्र में यज्ञ किसे कहा गया है?

उत्तर : शास्त्र में यज्ञ उसे कहा गया है, जिनसे प्राणीमात्र का हित होता है। यानी जिन कर्मों से समाज में सुख, ऐश्वर्य और प्रगति में बढ़ोत्तरी होती है।

प्र. 2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×3=3)

सरसों, गेहूँ, और चने के
लगते कितने प्यारे खेत,
बिछी रेशमी चादरों से
रंग-बिरंगे न्यारे खेत।
संग हवा के झूला झूले
लहर-लहर लहराते खेत,

सजी धजी नर्तकियों से
कत्थक नृत्य दिखाते खेत।
ये है धरती का परिधान
ये हमारे लिए भगवान,
इनसे भरते सबके पेट
इनसे जीते पशु इन्सान।

1. कविता में किन-किन फसलों की बात है?
   उत्तर : कविता में सरसों, गेहूँ और चने की फसलों की बात है।

2. हवा चलने पर खेत कैसे लगते है?
   उत्तर : हवा चलने पर खेत झूला झूलते से लगते है।

3. खेतों को भगवान क्यों कहा गया है?
   उत्तर : खेतों को भगवान कहा गया है क्योंकि खेत ईश्वर की तरह ही रक्षक और जीवन का आधार हैं।

प्र .3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×2=4)

आराधना

इन सबको किनारे रख दे।
द्वार बंद करके देवालय के कोने में क्यों बैठा है?
अपने मन के अन्धकार में छिपा बैठा, तू कौन -सी पूजा में मग्न है?
आँखें खोलकर देख तो सही
तेरा देवता देवालय में नहीं है।
जहाँ मजदूर पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार कर रहे हैं,
तेरा देवता वहीँ चला गया है।

क) कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में क्या कहते हैं?

उत्तर : कवि पुजारी से भजन, पूजन, साधन और आराधना के विषय में कहते हैं कि वे इन सभी को एक तरफ रख दें।

ख) कवि के अनुसार देवता कहाँ चले गए हैं?

उत्तर : कवि के अनुसार देवता पत्थर फोड़कर रास्ता तैयार करने वाले अर्थात् मजदूरी करने वाले मजदूरों के दिलों में चले गए हैं।

खंड - ख

प्र. 4. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए : 1

लिखवाई, शासकीय

उत्तर : वाई, ईय

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए : 1

उत्साह, भरसक

उत्तर : उत्, भर

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए : 1

पुरस्कार, बाकायदा

उत्तर : पूरस्+कार, बा+कायदा

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : 1

चलना , तोपची

उत्तर : चल+ना, तोप+ची

ड़) निम्नलिखित विग्रह का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखें : 3

1. लाभ और हानि
2. पाँच है आनन जिसके अर्थात् शिव
3. माल के लिए गाड़ी

विग्रह	समस्त पद	समास
लाभ और हानि	लाभ हानि	द्वंद्व
पाँच है आनन जिसके अर्थात् शिव	पंचानन	बहुब्रीहि
माल के लिए गाड़ी	मालगाड़ी	तत्पुरुष

च) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए : 4

1. बहुत से अफसर ईमानदार होते हैं।
   उत्तर : विधानार्थक वाक्य
2. आपकी यात्रा मंगलमय हो।
   उत्तर : इच्छा वाचक वाक्य
3. तुम उधर खड़े हो जाओ।
   उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य
4. अहा! क्या मौसम है।
   उत्तर : विस्मयादि बोधक वाक्य

छ) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए : 4

1. मंगन को देखि पट देत बार-बार है।
   उत्तर : श्लेष अलंकार
2. हनुमान की पूंछ में,लगन न पाई आग।
   लंका सगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।
   उत्तर : अतिशयोक्ति अलंकार
3. सुरभित सुंदर सुखद सुमन तुम पर खिलते।
   उत्तर : अनुप्रास अलंकार

4. काली घटा का घमंड घटा,
नभ मंडल तारक वृंद खिले।
उत्तर : यमक अलंकार

खंड - ग

प्र. 5. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : (1+2+2)

सेनापति 'हे' मन से दुखी होकर वहाँ से चला गया। इसके बाद जनरल अउटरम ने नाना के महल को फिर घेर लिया। महल का फाटक तोडकर अँग्रेज सिपाही भीतर घुस गए, और मैना को खोजने लगे, किंतु आश्चर्य है, कि सारे महल का कोना-कोना खोज डाला; पर मैना का पता नहीं लगा।

क) सेनापति 'हे' क्यों चला गया?

उत्तर : सेनापति 'हे' अउटरम की महल ध्वस्त करने की मंशा जानकर चला गया।

ख) अउटरम ने महल को क्यों घेर लिया? तथा अँग्रेज सिपाही महल में क्यों घुस गए?

उत्तर : मैना बाहर न जा सके इसलिए अउटरम ने महल को घेर लिया और मैना को पकड़ने के लिए ही अँग्रेज सिपाही महल में घुस गए।

ग) महल के कोने-कोने में क्या खोजा जा रहा था और कौन नहीं खोज पाए?

उत्तर : महल के कोने-कोने में मैना को खोजा जा रहा था और उन्हें अँग्रेज सिपाही नहीं खोज पाए।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4 = 8

1. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाईयों का सामना करा पड़ा?

उत्तर : लेखक को इस यात्रा के दौरान अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा :-

१) जगह-जगह रास्ता कठिन तो था ही साथ में परिवेश भी बिल्कुल नया था।

२) उनका घोड़ा बहुत सुस्त था। इस वजह से लेखक अपने साथियों से बिछड़ गया और अकेले में रास्ता भूल गया

३) डाकू जैसे दिखने वाले लोगों से भीख माँगनी पड़ी।

४) भिखारी के वेश में यात्रा करनी पड़ी।

५) समय से न पहुँच पाने पर सुमति के गुस्से के सामना करना पड़ा

६) तेज़ धूप में चलना पड़ा था।

७) वापस आते समय लेखक को रूकने के लिए उचित स्थान भी मिला था।

2. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्याबरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं ?

उत्तर : सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह के सामने केरल की साइलेंट-वैली संबन्धी खतरों की बात उठाई होगी। उस समय केरल पर रेगिस्तानी हवा के झोंको का खतरा मंडरा रहा था। वहाँ का पर्यावरण दूषित हो रहा था। प्रधानमन्त्री को वातावरण की सुरक्षा का ध्यान था। पर्यावरण के दूषित होने के खतरे के बारे में सोचकर उनकी आँखे नम हो गई।

3. नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए -

'तुम परदे का महत्त्व नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं'

उत्तर : प्रेमचंद ने कभी पर्दे को अर्थात लुकाव-छिपाव को महत्त्व नहीं दिया। उन्होंने वास्तविकता को कभी ढँकने का प्रयत्न नहीं किया है। लोग अपनी बुराइयों को कभी छिपाने का प्रयास नहीं किया। वे भीतर-बाहर एक समान थे।

4. लेखिका महादेवी ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर : महादेवी की माता अच्छे संस्कार वाली महिला थीं। वे धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। वे ईश्वर में आस्था रखती थीं। सवेरे "कृपानिधान पंछी बन बोले" पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं। लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन-गायन के शौक का वर्णन किया है। उन्हें हिंदी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा।

प्र. 7. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (1+2+2)

चित्रकूट की अनगढ़ चौड़ी
कम ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ
दूर दिशाओं तक फैली हैं।
बाँझ भूमि पर
इधर-उधर रींवा के पेड़
काँटेटेदार कुरूप खड़े हैं।

1. अनगढ़ शब्द का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यहाँ पर अनगढ़ शब्द से आशय बेडौल, ऊबड़-खाबड़ तथा ऊँची-नीची से है।

2. दूर दिशाओं तक फैली हैं - का भाव क्या है?

उत्तर : यहाँ पर भाव यह है कि पहाड़ियाँ थोड़ी जगह में सीमित न होकर बहुत दूर-दूर तक फैली है।

3. पहाड़ियों के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है?

उत्तर : पहाड़ियों के लिए - अनगढ़, चौड़ी, कम ऊँची तथा दूर दिशाओं तक फैली है विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

प्र. 8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2 x 4= 8

1. मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर : मेघ रूपी मेहमान के आने से हवा के तेज बहाव के कारण आँधी चलने लगती है जिससे पेड़ कभी झुक जाते हैं तो कभी उठ जाते हैं। दरवाजे खिड़कियाँ खुल जाती हैं। नदी बाँकी होकर बहने लगी। पीपल का वृक्ष भी झुकने लगता है, तालाब के पानी में उथल-पुथल होने लगती है, अंत में आसमान से वर्षा होने लगती है।

2. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?

उत्तर : कवि को बचपन में माँ ने यह सिखाया था कि दक्षिण दिशा की ओर यमराज का घर होता है अत: वहाँ पर कभी अपने पैर करके नहीं सोना उस तरफ़ पैर रखकर सोना यमराज को नाराज करने के समान है। माँ द्वारा मिली इस सीख के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

3. सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर : सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चों के वंचित रहने के मुख्य कारण सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक मज़बूरी है। समाज के गरीब तबके के बच्चों को न चाहते हुए भी अपने माता-पिता का हाथ बँटाना पड़ता है। जहाँ जीविका के लिए इतनी मेहनत करनी पड़े तब सुख-सुविधाओं की कल्पना करना असंभव सा लगता है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए -

'और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।'

उत्तर : प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मंगलेश डबराल' द्वारा रचित "संगतकार" कविता से ली गई है। इसमें कवि द्वारा गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्व को दर्शाया गया है।

भाव - कवि कहता है - संगतकार जब मुख्य गायक के पीछे-पीछे गाता है वह अपनी आवाज़ को मुख्य गायक की आवाज़ से अधिक ऊँचें स्वर में नहीं जाने देते ताकि मुख्य गायक की महत्ता कम न हो जाए। यही हिचक (संकोच) उसके गायन में झलक जाती है। वह कितना भी उत्तम हो परन्तु स्वयं को मुख्य गायक से कम ही रखता है। लेखक आगे कहता है कि यह उसकी असफलता का प्रमाण नहीं अपितु उसकी मनुष्यता का प्रमाण है कि वह शक्ति और प्रतिभा के रहते हुए स्वयं को ऊँचा नहीं उठाता, बल्कि अपने गुरु और स्वामी को महत्त्व देने की कोशिश करता है।

प्र. 9. लेखक के हिंदी लेखन में कदम रखने का क्रमानुसार वर्णन कीजिए। 4

उत्तर : • मित्रों के सहयोग, इलाहाबाद का संस्कार तथा हिन्दी कविता का वातावरण और प्रोत्साहन पाकर लेखक हिन्दी में रचनाएँ करने लगे।

- सन १९३३ में लेखक की कुछ कविताएँ 'सरस्वती' व 'चाँद' पत्रिका में छपीं।
- १९३७ में लेखक ने बच्चन जी के बताए अनुसार १४ पंक्तियों की कविता को लिखने का प्रयास किया।
- लेखक ने 'निशा निमंत्रण के कवि के प्रति' एक कविता लिखी जिस पर पंत जी के कुछ संशोधन भी हुए, पर अप्रकाशित रही।
- फिर लेखक 'रूपाभ' के आफिस में प्रशिक्षण लेकर बनारस से प्रकाशित 'हंस' के कार्यालय में काम सँभाला।

खंड - घ

प्र. 10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए। 10

'आज-कल लोगों में त्योहारों के प्रति उत्साह एवं आस्था का अभाव का बढ़ना'

भारत में विभिन्न धर्म विद्यमान हैं। इस कारण यहाँ उनसे जुड़े विभिन्न त्योहार विद्यमान है। त्योहार या उत्सव हमारे सुख और हर्षोल्लास के प्रतीक है जो परिस्थिति के अनुसार अपने रंग-रुप और आकार में भिन्न होते हैं। सभी त्योहारों से कोई न कोई पौराणिक कथा अवश्य जुड़ी हुई है और इन कथाओं का संबंध तर्क से न होकर अधिकतर आस्था से होता है। ये त्योहार भारत की एकता, अखंडता और भाईचारे का प्रतीक हैं। ये त्योहार हमारी प्राचीन संस्कृति के प्रतीक हैं और हमारी पहचान भी हैं। भारत संस्कृति में त्योहारों एवं उत्सवों का आदिकाल से ही काफी महत्त्व रहा है। परंतु आज यह देखकर दुख होता है कि लोग त्योहार के प्रति

नीरसता दिखाने लगे है। इसके कई कारण है - आज की जीवनशैली, बढ़ता काम का तनाव, महँगाई आदि।
आज के युग में मनुष्य बहुत अधिक व्यस्त रहता है। उसे समय ही नहीं कि त्योहार के लिए तैयारी करे। इसके अलावा आज महँगाई इतनी बढ़ गई है कि दो वक्त का खाना भी कई लोग मुश्किल से पाते हैं उसमें त्योहार का खर्च कहाँ करेंगे। आज के युग में मनुष्य संयुक्त परिवार में नहीं रहता जिससे भी त्योहार मनाने का उत्साह फीका पड़ जाता है।

‘पुस्तक की आत्मकथा’

बहुत दिनों से अपने मन की दशा किसी के सामने व्यक्त करना चाह रही थी। अच्छा, हुआ जो मैं आपके हाथ लगी। मैं आपको को अपनी आत्मकथा सुनाना चाहती हूँ। मैं आज जिस रूप में हूँ, वैसे ही मैं अपने प्रारंभिक रूप में कतई नहीं थी। प्राचीन काल में जब तक मेरा आविष्कार नहीं हुआ था तब तक मौखिक ज्ञान द्वारा ही शिक्षा प्रदान की जाती थी परंतु धीरे-धीरे जब ज्ञान को सुरक्षित रखने की समस्या उत्पन्न हुई तो पेड़ की छालों से बने भोजपत्रों पर लिखना आरंभ हुआ। उसके बाद कागज का आविष्कार हुआ और लोगों ने मुझ पर लिखना आरंभ किया। कवियों, लेखकों, साहित्यकारों, अन्वेषणकर्ताओं आदि द्वारा मुझ पर लिखने के पश्चात मुझे प्रेस में मुद्रण के लिए भेजा जाता है। वहाँ पर छापे खाने में मशीनों के अंदर मुझे असहनीय कष्टों से गुजरना पड़ता है। उसके बाद जिल्द बनाने वालों हाथों से मुझे गुजरना पड़ता है और इस तरह कई सारी प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद में पुस्तक विक्रेताओं के पास पहुँचती हूँ और अंत में आप जैसे पाठकों के हाथ मैं पहुँचती हूँ। पर यहीं पर मेरी कहानी समाप्त नहीं होती है। कुछ अच्छे पाठक होते हैं जो मुझे बेहद संभालकर रखते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं जो पढ़ने के बाद मुझे कहीं भी कोने में फेंक देते हैं। इन सब अनुभवों से गुजरने के बाद आज मैं आपके हाथ में हूँ। मैं पाठकों से केवल यही कहना चाहती हूँ कि पढ़ने के बाद मुझे फेंके नहीं और न ही फाड़े। यदि वे मुझे पढ़ना न भी चाहते हो

तो घर में कहीं संभालकर रख दें या किसी अन्य पुस्तक प्रेमी या जरूरतमंद को दे दें।

प्र. 11. आपके नाम से प्रेषित एक हजार रु. के मनीआर्डर की प्राप्ति न होने का शिकायती पत्र अधीक्षक, पोस्ट आफिस को लिखिए।

दून छात्रावास

देहरादून

दिनाँक - 15 मार्च 2016

सेवा में,

अधीक्षक

पोस्ट ऑफिस

देहरादून

विषय : मनीआर्डर की प्राप्ति न होने हेतु शिकायती पत्र।

महोदय

मेरे पिताजी ने मेरी परीक्षा फ़ीस भरने के लिए कार्तिक गोदाल के नाम से एक हजार रु. का मनीआर्डर दस दिन पहले (5 मार्च 2016) को किया था, मुझे वह अब तक प्राप्त नहीं हुआ। ये पैसे मुझे अपनी वार्षिक परीक्षा शुल्क भरने के लिए भेजा गया था। मुझे शीघ्र ही फ़ीस भरनी है।

अत: आपसे निवेदन है कि आप तुरंत इस बात का संज्ञान लेते हुए मेरी समस्या को सुलझाने का प्रयास करें।

धन्यवाद

भवदीय

कार्तिक गोदाल

प्र. 12 ऑफिस में क्लर्क की नौकरी हेतु साक्षात्कार देने आए दो उम्मीदवारों के मध्य संवाद लिखें। 5

निखिल : नमस्ते !

राहुल : नमस्ते !

निखिल : आप भी साक्षात्कार हेतु आए हैं।

राहुल : जी हाँ।

निखिल : बहुत ज्यादा उम्मीदवार आए है ना?

राहुल : जी, यह हाल तो हर जगह है ।

निखिल : हाँ, मैं अब तक चार साक्षात्कार के लिए जा चूका हूँ। एक पद के लिए बीस-तीस उम्मीदवार तो रहते ही है।

राहुल : इसीलिए बेरोजगारी बढ़ रही है।

निखिल : सरकार को और अधिक रोजगार योजना बनानी होगी।

राहुल : सरकार भी क्या करें! उनकी योजनाएँ बढ़ती आबादी के सामने दम तोड़ देती है।

निखिल : सही कह रहे है।

राहुल : चलो मैं चलता हूँ। मेरा नंबर आ गया।